بِسْجِلِيلْهِ الرَّحْمِنِ الرَّحِيْمِ

AL-QURAN THE CRITERION



INTERNATIONAL
ISLAMIC PROPAGATION
CENTRE CANADA

अल-कुरआन क्या कहता है

क़िसास/बदल/क्षतिपूर्ति के बारे में

संकलकः मुहम्मद शेख

#अब्दुल्लाह #कुरआनकाबश

2012 को IIPC कनाडा द्वारा प्रकाशित



106



मुहम्मद शेख को शेख
अहमद दीदात द्वारा 1988
में डरबन ,दक्षिण अफ्रीका
के IPCI द्वारा आयोजित
दावा और तुलनात्मक धर्म
पर प्रशिक्षण लेने के लिए
चुना गया था। इस दावा
और तुलनात्मक धर्म
प्रशिक्षण के पूरा होने पर
मुहम्मद शेख को IPCI
द्वारा एक प्रमाण पत्र से
सम्मानित किया गया था
जिसे स्वयं माननीय शेख
अहमद दीदत ने प्रस्तुत
किया था



सोशल मीडिया नेटवर्क

You Tube

facebook.

App Store

Coogle play

⊚Instagram **ć**†V

androidty

Roku

amazon fire TV

ONIDIA SHIELD





Podcasts



TIKILIVE



₪ Mi Box



Shava

acloco



ZAAPTV





maaxiv



RAVO





दान करें :-

शीर्षक:-इन्टरनेशनल इस्लामिक प्रोपेगेशन सेन्टर कनाडा 7060 मकलाउघलीं रोड, मिससीससाउगा ONL5W1W7 कनाडा

बैंक का नाम- TD CANADA TRUST

www.themuslim500.com

अकाउंट नम्बर:5042218 ट्रांसिट नम्बर- 15972 कनाडा IBAN - 026009593

(अमेरिका से दान देने वालों के लिए)

स्विफ्ट कोड:TDOMCATTTOR इंसटीट्यूशन नम्बर- 004 शाखा का नम्बर:1597 ABA026009593

132 मैन ST साउथ, रॉकवुड, ON NOB 2KO ,कनाडा 1-800-867-0180

अभी पंजीकरण करें



www.iipccanada.com info@iipccanada.com



पुस्तिका का परिचय

प्स्तिका के बारे में यह म्हम्मद शेख द्वारा संकलित एक व्याख्यान संदर्भ पुस्तिका है यह हर विषय के व्याख्यान के अनुसार है इस प्स्तिका का उद्देश्य पाठक को क्रआन के विषय से परिचित कराना है। इसका अध्ययन स्वयं किया जा सकता है और यह हर विषय के वीडियो व्याख्यान को भी पूरा करता है जो इसके ही साथ होता है। वीडियो व्याख्यान में चर्चा के अन्सार इस पुस्तिका में विषय से संबंधित आयत (कुरआन की आयतें) हैं। व्याख्यान के बाद प्रश्न उठाए जाते हैं, और उनके उत्तर आयत द्वारा दिए जाते हैं। वीडियो व्याख्यान और उनके व्याख्यान संदर्भ प्स्तिकाएं हमारी वेबसाइट www.iipccanada.com पर उपलब्ध हैं। यहां दिए गए क़ुरआन के संदर्भ संपूर्ण नहीं हैं, लेकिन विषय का मूल सार प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकाशन में जिन संदर्भों को बाहर रखा गया है, उन्हें किसी भी अच्छी सहमति का उपयोग करके शोध किया जा सकता है और यह पता चलेगा कि इस प्रकाशन में पेश किया गया चयन पूरे अनुक्रम में सामंजस्य स्थापित करेगा। यह आशा की जाती है कि मुस्लिम(आज्ञाकारी) पाठक इन आयतों को अपने अरबी पाठ के साथ याद करेंगे और अपने मित्रों और सहयोगियों को दावत (इस्लाम का प्रचार) में संलग्न करेंगे, और अपनी सलाह/प्रार्थना में भी इसे पढ़ सकेंगे। इस तरह, पुस्तिका रोज़मर्रा की ज़िंदगी में मुस्लिम के लिए एक उपयोगी उपकरण बन जाती है - इंशाअल्लाह। आयत का अनुवाद मुहम्मद शेख ने किया है। विषय के संबंध में किसी भी प्रश्न, टिप्पणी या सुझाव का ईमेल के माध्यम से किया जा सकता है: info@iipccanada.com

AL-QURAN THE CRITERION



CENTRE CANADA

मुहम्मद शेख के बारे में

मुहम्मद शेख इस्लाम और तुलनात्मक धर्म पर एक सार्वजनिक वक्ता हैं। उनके व्याख्यान कुरआन के पाठ पर आधारित हैं जो कई गलत धारणाओं को दूर करने, प्रामाणिक इस्लामी

मान्यताओं को प्रस्तुत करने और कुरआन के अपने आंतरिक सब्त के आधार पर तर्कसंगत और उद्देश्य विश्लेषण के लिए अपील करने का काम करते हैं। राजनीतिक या सांप्रदायिक पक्ष लिए बिना, वह लोगों को यह समझने और विश्लेषण करने के लिए कहते है कि कुरआन सबसे पहले किसी विषय के बारे में क्या कहता है, क्योंकि यह कुरआन है जो इस्लाम का प्रमुख आधिकारिक पाठ और अल्लाह/भगवान का वचन और मानव जाति के लिए स्पष्ट सच्चाई है। मुहम्मद शेख को कराची पाकिस्तान से शेख अहमद दीदत द्वारा 1988 में IPCI डरबन दक्षिण अफ्रीका द्वारा आयोजित दावाह और तुलनात्मक धर्म पर प्रशिक्षण से गुजरने के लिए चुना गया था। इस दावाह कोर्स के पूरा होने के बाद मुहम्मद शेख को IPCI से एक प्रमाण पत्र प्रदान किया गया था जिसे स्वयं माननीय शेख अहमद दीदात ने प्रस्तुत किया था।



ISLAMIC PROPAGATION

IIPC-इंटरनेशनल इस्लामिक प्रोपेगेशन सेंटर के बारे में

इंटरनेशनल इस्लामिक प्रोपेगेशन सेंटर (IIPC) एक दावाह संगठन है जिसका उददेश्य अल-क्रआन अल्लाह/भगवान की प्स्तक को

बढ़ावा देना है, IIPC की स्थापना 1987 में म्हम्मद शेख द्वारा कराची, पाकिस्तान में की गई थी। हालाँकि IIPC का वर्तमान स्थान एक पंजीकृत धर्मार्थ संगठन के रूप में रॉकव्ड, कनाडा में है। यह मुहम्मद शेख द्वारा दिए गए व्याख्यानों के माध्यम से अल-कुरआन को समझने और सराहना करने के लिए सभी धर्मों और आस्था रखने वाले लोगों को आमंत्रित करता है, और यह आयोजन, मुद्रित प्रकाशनों इलेक्ट्रॉनिक मीडिया प्रोडक्शंस, इंटरनेट टीवी द्वारा प्रसारण और इसकी वेबसाइट के माध्यम से जनता तक पहंचने का प्रयास करता है। केंद्र अल-इस्लाम को अल्लाह/भगवान की आयत(निशानी) के आधार पर अपने प्राचीन रूप में प्रचारित करने का प्रयास करता है ताकि आम जनता मुफ्त में सीखने की सामग्री के माध्यम से अपनी गतिविधियों से लाभान्वित हो सके और वक्ता के साथ सीधे परामर्श करे अपने दैनिक जीवन में अल-क़्रआन के अभ्यास और समझ के बारे में। केंद्र का कोई राजनीतिक या सांप्रदायिक संबद्धता नहीं है और यह केवल एक धर्मार्थ आधार पर फि-सबील अल्लाह चलाया जा रहा है। हम सभी मुसलमानों से अल्लाह/भगवान के लिए हमारे साथ हाथ मिलाने का अनुरोध करते हैं और दावाह के हमारे मिशन को समर्थन करने का अन्रोध करते हैं (यानी द्निया की जनता के लिए अल-इस्लाम का निमंत्रण देने के लिए)

अल- कुरआन से हमारा सिद्धांत याद करो जब अल्लाह/भगवान ने उन लोगों से, जिन्हें किताब प्रदान की गई थी, वचन लिया था कि उसे लोगों के सामने भली-भाँति स्पष्ट करोगे उसे छिपाओगे नहीं।" किन्तु उन्होंने उसे पीठ पीछे डाल दिया और थोड़ी कीमत पर उसका सौदा किया कितना बुरा सौदा है जो ये कर रहे है!

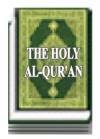


पढ़!

अपने रब/भगवान के नाम के साथ अल-क़्रआन अल्लाह/भगवान की किताब

अल-कुरान से 6237 में से सिर्फ दो आयतें।

और हमने
कुरआन को नसीहत
के लिए अनुकूल
और सहज बना
दिया है। फिर क्या
है कोई नसीहत
करनेवाला?

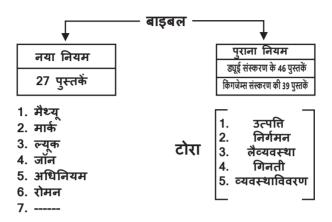


क्या वे कुरआन में सोच-विचार नहीं करते? यदि यह अल्लाह/भगवान के अतिरिक्त किसी और की ओर से होता, तो निश्चय ही वे इसमें बहुत-सी बेमेल बातें पाते। 4:82

54:17

- *मानवता की घोषणा
- *दया और बुद्धि का झरना।
- *लापरवाह के लिए एक चेतावनी।
- *भटके हुए के लिए एक मार्गदर्शक।
- *संदिग्ध के लिए एक आश्वासन।
- *कष्ट के लिए एक धीरज।
- *निराश लोगों के लिए एक आशा।

यहूदियों और ईसाइयों के विश्वास अनुसार



बाइबल

बाइबल शब्द ग्रीक से लिया गया है बिबिलिया का अर्थ "किताबें" और यहूदी धर्म और ईसाई धर्म के पिवत्र लेखन को संदर्भित करता है. बाइबल दो भागों से मिलकर बनी है। पहला भाग जिसे ईसाइयों द्वारा कहा जाता है पुराना नियम, वह यहूदियों के पिवत्र लेखन के होते हैं और वह मूलरूप से हिब्रू में लिखा गया था अरामी में कुछ हिस्सों को छोड़कर। दूसरे भाग को ईसाइयों द्वारा कहा जाता है नया नियम वह ग्रीक में रचा गया था और यीशु की कहानी और ईसाई धर्म की शुरुआत को अभिलेख करता है.

यहूदीयों और ईसाइयों के विश्वास अनुसार

टोरा

टोरा (एक हिब्रू शब्द है अर्थ "निर्देश") अपने व्यापक अर्थ में यहूदी शिक्षाओं के संपूर्ण संस्था को पुराना नियम और तल्मूद में शामिल और बाद में रैबिनिकल टिप्पणियों को संदर्भित करता है. लिखित संग्रह के लिए पुरोहितों के निर्णयों को धीरे-धीरे नाम लागू किया गया. सबसे विशेष रूप से बाइबल की पहली पांच किताबों में लिखित मोज़ेक कानून में निहित है उत्पत्ति, निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, गिनती और व्यवस्था विवरण को पंच ग्रन्थ-टोरा भी कहा जाता है। बाद के अर्थ में सूची में हर आराधनालय का सन्दूक पर संरक्षित रखे गए। टोरा का वाचन आराधनालय सेवा के लिए केंद्रीय है।

युनुस 10

37.और ये कुरआन/पढ़ाई ऐसी
नहीं है कि अल्लाह/भगवान
के अतिरिक्त इसको कोई गढ़
लाए और लेकिन ये तो पुष्टि
करने वाली है उसकी जो उसके
दोनों हाथों के बीच है और
अल-किताब/लिखाई का विवरण
है। उसमें कोई संदेह नहीं
संसारों के रब/पालनेवाले की
ओर से है।

وو مر يۇنس ١٠

وَاكَانَ هَنَ االْقُرْانُ اَنْ يُّفَتَرَى مِنْ دُونِ اللهِ وَلَكِنُ تَصْدِينَ الَّذِي بَيْنَ يَكُنِهُ وَتَفْصِيلَ الْكِتْبِ لَادَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِ الْعَابَىٰنَ ﴾ مِنْ رَّبِ الْعَابَىٰنَ ﴾

पुस्तक के गुण नाम

अंग्रेज़ी	हिंदी	सूराह और आयात नंबर	अरबी	क्रमांक
THE READING	पढ़ाई	2:185	ٱلْقُرُان	01
THE LAW	कानून	5:44	التؤرية	02
GOOD NEWS	शुभसंदेश	3:3	ٱلْإِنْجِيْل	03
PIECE	अंश/खंड	21:105	ٱلۡزَبُوۡر	04
CRITERION	मानदंड/कसोटी	2:185	أنفرقان	05
PROOF	प्रमाण	4:174	ٱلبُّرُهانَّ	06
AUTHORITY	अधिकारी	11:96	أأسلظين	07
WISDOM	अकलमंदी/ज्ञान	2:231	أنجأة	08
GUIDANCE	मार्गदर्शन	2:2	هِكَايَكُ	09
REVELATION	अवतरण	2:185	نازِل	10
INSPIRATION	प्रेरणा	53:4	ۇخى	11
SPEECH / WORD	वाणी/शब्द	2:75	كالحر	12
INSIGHT	अंतर्दृष्टि	6:104	بَصَآيِرُ	13
SIGNS	निशानियाँ	2:99	أيلت	14
GLORIOUS	तेजस्वी	85:21	اَلْجَحَيْثُ	15
AMAZING	अद्भुत	72:1	عَجِيْثِ	16
LIGHT	प्रकाश	5:15	ٱلنُّوْرُ	17

पुस्तक के गुण नाम

अंग्रेज़ी	हिंदी	सूरह और आयात नंबर	अरबी	क्रमांक
MOST BEAUTIFUL	अति सुंदर घटनाएं	39:23	آخسن أنحكويث	18
MOST BEAUTIFUL RELATIONSHIP	अति सुंदर संबंध	12:3	آخْسَنَ الْقَصَصِ	19
EXAMPLES	उदाहरण	14:25	ٱلْاَمْثَالُ	20
SERMON	उपदेश	5:46	مَوْعِظةً	21
REMEMBRANCE	स्मरण	15:9	الَدِّكُرُ	22
TABLETS	तख़ितयाँ/पट्टी	7:145	اَلَا لُوَاحُ	23
SHINE	चमक	21:48	ۻؽٳۼ	24
CLARITY	स्पष्टता	2:99	بَيِّنْت بَيِّنْت	25
MESSAGES	संदेश	7:62	رسِلتِ	26
THE NEWS	समाचार	3:44	ٱلْأَثْبَاء	27
THE SAYING	कहावत	32:68	ٱلۡقُوۡلُ	28
PAGES	पन्ने	98:2	صُحُفُ	29
WAY	राह	45:18	شريعة	30
THE ORDER OF ALLAH	अल्लाह का आदेश	9:48	ألكمرالله	31
THE TRUTH	सत्य	10:35	ٱلْحَقَّ	32
THE KNOWLEDGE	ज्ञान	2:145	ٱلْعِلْمُ	33

आल-ए-इमरान 3

7.वह ही है जिसने तुझ पर किताब अवतरित की उसमें से मुहक्मात/हुक्म वाली आयात/निशानियाँ हैं। वह किताब की माँ हैं और दूसरी मुताशाबिहात/मिलती ज्लती (आयात/निशानियाँ) हैं। बस जिन लोगों के दिलों में टेढ है वह पालन करते हैं जो उससे मुताशाबा/मिलता जुलता है फ़ितना/वशीकरण ढूढ़ते हैं और उसकी तावील/व्याख्या ढ़ढ़ते हैं। और सिवाय अल्लाह/ भगवान के उसकी व्याख्या कोई नहीं जानता। और इल्म/ ज्ञान में जो स्थिर हैं वह कहते हैं हम इसके साथ ईमान/ विश्वास लाए सब हमारे रब/ पालनेवाले के पास से है। और दानिशमंदों/मेधावी/जिनके पास मूल है (किसी भी चीज़ का अंतरतम भाग) के सिवाय कोई नहीं याद रख सकता।

ال عِمْرِنَ ٢

هُوَالِّنِ ثِيَ أَنْزُلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ مِنْهُ أَمْرُ الْكِتْبِ وَأَحْرُ مُتَشْرِهِ الْحَثْ هُنَّ أُمْرُ الْكِتْبِ وَأَحْرُ مُتَشْرِهِ الْحَثْ الْحَدَّ الْحَدَّ الْحَدْ الْمَثْلِيْةُ وَالْمَثَلِيْةُ وَالْمَثَلِيْةُ وَالْمِنْ اللَّهِ اللَّهِ الْمَثَلِيةِ وَالْمِنْ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الْمُثَالِلِةُ وَالْمِنْ اللَّهِ الْمَثَلِيةِ وَالْمِنْ اللَّهِ اللَّهِ الْمَثَلِيةِ وَالْمِنْ الْمَثَالِلِةِ اللَّهِ الْمَثَلِيةِ الْمَثَلِيةِ الْمُنْ اللَّهِ الْمُنْ الْمُثَالِلِةِ الْمُنْ الْمُنْفُلِقُلْمُ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْفُلُولُولُولُولُولُولُ الْمُنْ ال

43.और वह कैसे तुझे हुकुम/आजा देंगे और उनके पास तौरात/ कानून है उसमें अल्लाह/ भगवान के हुकुम/आजा है। फिर उसके बाद वह पलट जाते हैं और वह मोमिनों/ विश्वासियों के साथ नहीं हैं।

44.निश्चित ही हमने तौरात/क़ान्न अवतरित किया (जिसमें अल्लाह/ भगवान की ह्कूमत/शासन है जो कि सारी हक्म वाली आयात/निशार्नियां हैं) उसमें मार्गदर्शन और प्रकाश है, मस्लिम/समर्पण करने वाले नंबियों/भविष्यवक्ताओं ने उसके साथ हकमत/शासन किया उन लॉगों के लिए जो हाद्/सहिष्ण्/यह्दी हैं। और रब्बानियून/पालेनेवाले/स्वामियों और अहबार/विद्वानों ने (उसके साथ हक्म किया) उसके साथ जो वहँ अल्लाह/भगवान की किताब से हाफिज़/कंठस्थ बनने की चाहत कराए गए थे और वह उसके ऊपर साक्षी हैं बस त्म लोगों से मत डरो और मुझसे डरो और तुम थोड़े मुल्य पर मेरी आयात/निशानियां नहीं खरीदो। और जो उसके साथ हुक्मत/शासन नहीं करते जो ॲल्लाह/भगवान ने अवतरित किया बस वही तो काफ़िर/इ नकारी हैं।

ٱلْمَآئِلَةِ ٥

ٷڲؽ۬ڡؘڲؙػؚۘڮٞؠ۠ٷؘڹڮ ۅۼڹؙۘۯۿۄؙٳڶؾٞٷڔٮڎؙڣؽۿٵڪڬۄؙٳٮڵڡؚ ٮؙؙڴؾٷٷۧڹٛۻڹٛڹۼ۫ڔۮ۬ڸؚڰ ٷڡٵٛٳ۠ۅڵڶٟٟڮٙڔؚٳڶؠٷ۫ڡؚڹؽڹؘ۞۫

إِنَّا اَنْزَلْنَا التَّوُرِيةَ فِيهَاهُكَى وَنُوْرَة يَحُكُمُ بِهَا النَّبِيُّوْنَ النَّرِيْنَ اَسُكَمُو النَّرِيْنَ هَادُوْا وَالْاَيْنِيُّوْنَ وَالْاَحْمَارُ وَالْاَيْنِيُّوْنَ وَالْاَحْمَارُ وَكَانُوْا عَلَيْهِ شُهَكَ كَانُوا اللَّاسَ وَاحْشُورِ وَكَانَتُ شَعْرُوا بِالْيَّيِّ ثَمَنًا قَلِيْلًا وَمَنْ لَتَمْ يَحِكُمُ بِمَا الْكَانِ اللَّهُ وَمَنْ لَتَمْ يَحِكُمُ بِمَا الْكَافِرُونَ اللَّهُ وَمَنْ لَتَمْ يَحِكُمُ بِمَا الْكَافِرُونَ اللَّهُ وَمَنْ لَتَمْ يَحِكُمُ بِمَا الْكَافِرُونَ اللَّهُ

45.और हमने उस तौरात/क़ानुन में उनके ऊपर लिख दिया। यह की नफ्स/मनोभाव के साथ नफ्स/मनोभाव और आंख के साथ आंख और नाक के साथ नाक और कान के साथ कान और दांत के साथ दांत और जख्मों/घावों (अर्थात शारीरिक और नफ़्सयाती/ मानसिक जख्म/घाव) के साथ प्रतिकार/क्षतिपूर्ति है। बस जो कोई उसके साथ दान करेगा बस वही उसके लिए कफ्फारा/ प्रायश्चित होगा (अर्थात अपने को सही करना होगा) और जो कोई उसके साथ हक्म नहीं करते, जो अल्लाह/भगवान ने अवतरित किया बस वही अत्याचारी हैं।

ٱلْمَائِلُةِ ٥

وَكِتَبُنَاعَلَيْهِمْ فِيهُا اَنَّالنَّفُسِ بِالنَّفُسِ وَالْحَيْنَ بِالْحَيْنِ وَالْاَنْفَ بِالْاَنْفِ وَالْاَنْفَ بِالْاَنْفِ وَالْجُدُوفَ وَصَاصٌ « وَالْجَدُوفَ وَصَاصٌ « وَمَنْ تَصَدَّ فِي السِّنِ « وَمَنْ تَصَدَّ فَكُمُ بِمَا الْزُلَ اللَّهُ فَكُنْ تَصَدَّ فَكُمُ بِمَا الْزُلَ اللَّهُ فَاوْلِيْكَ هُمُ الظّلِمُونَ © فَاوْلِيْكَ هُمُ الظّلِمُونَ ©

गुडन्यूज़ बाइबल, यहूदी और इसिययों के विश्वास अनुसार

लैव्यव्यवस्था 24:17-23

यदि कोई मनुष्य की जान लेता है, तो उसे अवश्य ही मार डाला जाना चाहिए। यदि कोई अपने पड़ोसी को चोट पहुँचाए, तो जो कुछ उसने किया है, उसके साथ किया जाए, अस्थि-भंग के बदले अस्थि-भंग, आंख के बदले आंख, दांत के बदले दांत। जैसे उसने दूसरों को चोट पहुंचाई है, वैसे ही उसे भी चोट लगनी है।

अश-शूरा 42

- 39.और जब लोगों को ग़लत/
 अनुचित पहुंचता है तो वह
 अपनी सहायता स्वयं करते हैं।
 (जो कोई ग़लत/अनुचित करेगा
 स्वयं उसके साथ ग़लत/अनुचित
 हो जाएगा)।
- 40.और बुराई/चोट का प्रतिफल
 उसी के अनुरूप की बुराई/चोट
 है। बस जो कोई माफ़ कर दे
 और सही करे बस उसका
 प्रतिफल अल्लाह/भगवान के
 ऊपर है। निश्चित ही अल्लाह/
 भगवान अत्याचारियों से प्रेम
 नहीं करता।
- 41.और अवश्य जिसने अपनी
 सहायता स्वयं की, पश्चात उस
 पर अत्याचार हुआ, बस वे हैं
 जो (ग़लत/अनुचित) मार्ग में
 से नहीं हैं।
- 42.निश्चित ही जो लोग (ग़लत/ अनुचित) मार्ग पर हैं वे इन्सानों पर अत्याचार करते हैं और वह धरती में बिना हक़ के ग़लत/ अनुचित करते हैं। वे ही हैं जिनके लिए दर्दनाक अज़ाब/ सजा है।
- 43.और जो कोई धैर्य करे और क्षमा दे, निश्चित ही वह साहस और प्रोत्साहन वाले उमूर/कार्य-समूह हैं। (अर्थात माफ़ करना, सही करना, क्षमा देना और धैर्य से स्वयं अपनी सहायता करना)।

ٱلشُّوْرِي ٤٢

ۉٵٮٛۜڹؽڹٳۮؘٳۘٛڰڝٵڹۿؙؗؗؗؗؗؗۄؙٳڶڹڠ۬ؽؙ ۿؙؙ؞ٝؽؙؿؙۘڝؚۯؙۏؚؗڹؘ۞

ۅؘۘۘۘۻڒۧۊؙؙٳڛؾؚۓڐٟڛؾؚۓڐۜٛ؆ؚؾ۬ٛڵۿٵ ڡٛؠڹؗ؏ڣؘٳۅٳۻڶڂۏٳڿۯ؇ٸڶٳڵڷٟ ٳٮۜٛڬڶٳؽؙڿؚۘۺؙٳڵڟڸؠۣؽؘ۞

ٷؚڮؠؘڹٳڹٛٮٛڞۯڽۼۮڟڶؠؚ؋ ڡؙٲۅڷڵؚٟڮڡٵۘۼڵؽ*ڣڔ؋*ڔۨؽڛڽؽڸؚ۞

ٳڹؽٵۘٳڵۺؠؽڮٛۼۘڮٳڷڔٚڽؽ۬ ؽڟؠ۠ٷؽٵڵؾٞٳڛ ۅؘؽڹۼؙٷٛؽ؋ٵڵٳۯۻؠۼؽڗٳػؚٛۊ ٵۅڵڽٟڮؘڮۿؙؙۿؙؙڡٛٷٳۻؙۘٲڶؚؽڠۘۘٛ۫ٛ۫۫ڰ

ۅؙڷؠۘڽؙٛڞؘۻڔۘۯٷۼڡٛڒ ٳڽۜۘ۠ؗؗؗؗؗؗؗؗڋڸؚڰڶؠٟڹٛۼڹٛۄ۪ٳڶٳؙٛٛڡؙٷڕؘؚۛؖۛ

फुस्सीलत 41

34.और अच्छाई और बुराई/चोट समान नहीं हैं। दफ़ा करो/ हटाओ (बुराई/चोट को) उसके साथ जो अच्छा है। बस जब तेरे और उसके बीच शत्रुता हो तो निश्चित ही वह ऐसा हो जायेगा जैसा कि निकटतम औलिया/रक्षक हो।

فُصِّلَتُ ٤١

ۅؘلاتسْتُوى الْحَسْنَةُ وُلَا السَّيِّئَةُ الْأَدِّى الْحَسْنَةُ وُلَا السَّيِّئَةُ الْمَادُونَةُ الْمَادُةُ ا اِذْفَةَ بِالَّذِي الْمَانَكُ وَبَيْنَكُ عَلَا اوَهُ الْفَادُالِّ الْمَادُةُ الْمَادُةُ الْمَادُةُ اللَّهِ الْمُ

अल-अनआम 6

160.जो कोई अच्छाई के साथ
आएगा बस उसके लिए उसके
अनुरूप दस अच्छाईयां हैं,
और जो कोई बुराई के साथ
आएगा बस प्रतिफल नहीं है
उसके लिए सिवाय उसके
अनुरूप एक बुराई है। और वह
अत्याचार नहीं किए जाएंगे।

الكانعام ي

مَنُ جَآءَ بِالْحُسَنَةِ فَلَهُ عَشُرُامُثَالِهَا وَمَنُ جَآءَ بِالسَّيِئَةِ فَلَا يُخُزِّى الْآمِثُلَهَا وَهُمُلَا يُظْلَمُونَ ﴿

अल-बक्रा 2

84.और जब हमने तुमसे प्रतिज्ञा ली कि तुम अपना खून/रक्त नहीं बहाओगे, और अपने नफ़्सों/मनोभाव को अपने दायरों/परिधियों से नहीं निकालोगे फिर तुमने इक़रार किया/माना और तुम गवाह/ साक्षी हो।

अल-इसरा 17

33.और तुम नफ़्स/मनोभाव को कृत्ल/हत्या ना करो जिसको अल्लाह/भगवान ने हराम/
निषद्ध किया है, सिवाय हक़ के साथ। और जो मज़लूम/
अत्याचार पीड़ित क़त्ल/हत्या किया गया बस वास्तव में हमने उसके वली/रक्षक को सुल्तान/अधिकार वाला बनाया बस वह क़त्ल/हत्या में असराफ़/
अधिकता न करे। निश्चित ही वह सहायता किया हुआ है।

अल-बक़रा 2

147.हक़ तेरे रब/पालनेवाले से है बस तू शंका करने वालों में से न हो जा।

اَلۡبُقَرَةٍ ٢

ۉٳۮ۬ٲڂڹٛؽؘٵڡؚؽؿٵڨػؙڡٝ ڵٲۺڣػ۠ۏۛڹۮؚڡٵؘٷۿ ۉڵٳؿؙڂٛڔؚڿؙۏڹٲڹٛڡؙٛۺػؙۿۺڹٝۮٟۑٳڔػۿ ؿڗۜٲڨٝۯۯؿ۠ۿؙۅؘٲڹ۫ڎۿڗۺٛۿڹٛۏڹۨ

ألِّرْسُراءِ ١٧

وَلِا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الْآَيَٰ حَرَّا اللهُ الَّا رِالْحَقِّ لَّ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُوْمًا فَقَلْ جَعَلْنَا لِوَلِيّهِ مُسلَظًا فَلَا يُسْرَفْ رِضَ الْقَتْلِ لَٰ اِنَّهُ كَانَ مَنْصُوْرًا ﴿

اَلۡبَقَرَةِ ٢

ٱڰؾٞ۠ڡؚڽٛڗؾؚڮ ڡٞڵٳڗؘڲؙۏٛ؈ؘۜڡؚؽٳڶۿڡٛڗٙڔؚؽڹ۞۫

बाइबिल के अनुसार यहूदियों और ईसाइयों के विश्वास।

निर्गमन 21:12

जो किसी मनुष्य को ऐसा मारे कि वह मर जाए, तो वह भी निश्चय मार डाला जाए।

गिनती 35:16

16 परन्तु यदि कोई किसी को लोहे के किसी हथियार से ऐसा मारे कि वह मर जाए, तो वह खूनी ठहरेगा; और वह खूनी अवश्य मार डाला जाए।

लैव्यव्यवस्था 24:21-23

"और पशु का मार डालनेवाला उसको भर दे, परन्तु मनुष्य का मार डालनेवाला मार डाला जाए।" "तुम्हारा नियम एक ही हो, जैसा देशी के लिये वैसा ही परदेशी के लिये भी हो; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं।" और मूसा ने इस्त्राएलियों को यही समझाया; तब उन्हों ने उस शाप देनेवाले को छावनी से बाहर ले जाकर उसको पत्थरवाह किया। और इस्त्राएलियों ने वैसा ही किया जैसा यहोवा ने मूसा को आजा दी थी।।

बाइबिल के अनुसार यहूदियों और ईसाइयों के विश्वास।

निर्गमन 21:15

जो अपने पिता वा माता को मारे-पीटे या शाप दे वह निश्चय मार डाला जाए।

व्यवस्था विवरण 21:18-21

एक विद्रोही, हठी और पियक्कड़ पुत्र जो अपने माता-पिता की आजा का पालन नहीं करता है, तो नगर के सभी लोग उसे पत्थरों से मार डाला जाए।

व्यवस्था विवरण 17:12

"तुम्हें यहोवा अपने परमेश्वर की सेवा करने वाले उस समय के याजक और न्यायाधीश की आज्ञा का पालन करने से इन्कार करने वाले किसी व्यक्ति को भी दण्ड देना चाहिए। उस व्यक्ति को मारना चाहिए। तुम्हें इस्राएल से इस ब्रे व्यक्ति को मार डाला जाए।

निर्गमन 35:2

छह दिनों में काम किया जा सकता है, लेकिन सातवें दिन आपके लिए एक पवित्र दिन होना चाहिए, पूर्ण विश्राम का सब्त भगवान जो कोई भी इस पर काम करेगा उसे मार डाला जाए।

व्यवस्था विवरण 13:1-10

यदि कोई भविष्यवक्ता या कोई भी जो सपने से भविष्यवाणी करता है और कहता है कि हमें पालन करें और अन्य देवताओं की पूजा करें उसे मार डाला जाए।

लैट्यट्यवस्था 20:2

इस्राएिलयों से कह कि इस्राएिलयों में से या इस्राएिलयों के बीच रहनेवाले परदेशियों में से, कोई क्यों न हो जो अपनी कोई सन्तान मोलेक को बिलदान करे, वह निश्चय मार डाला जाए; और जनता उस पर पथराव करे।

अल-बक़रा 2

178.ऐ वे लोगों जो ईमान/विश्वास लाए हो तुम पर क़त्ल में संबंध/बदल/श्रतिपूर्ति लिख दिया, इस तरह कि आज़ाद/ स्वतंत्र के साथ आज़ाद/स्वतंत्र. और नौकर के साथ नौकर. और मादा के साथ मादा। बस जिस (क़ातिल/हत्यारे) को अपने (मक़तूल मोमिन/मृतक विश्वासी) भाई की ओर से कुछ माफ़ी दी जाए बस वह जाने पहचाने के साथ पालन करे, और अहसान/अच्छाई के साथ उसका भ्गतान दे। यह त्म्हारे रब/पालनेवाले की ओर से तख़्फ़ीफ़/छूट (कमी) और रहमत/कृपा है। बस जो इसके पश्चात हद से बढा, बस उसके लिए दर्दनाक अज़ाब/सज़ा है।

البَقَرَةِ ٢

ێٲێٞۿٵڷڒؽؙڹٵڡڹؙۏٳ ڪٛٚڗۘڹۜۼڶؽڬڴٳڶۊڝٵڞ ڣۣٳڶڨؙؾؙڸ ٲڬڒؙڽٳڬڂڗۅٳڶۼڹؙۮؠؚٳڵۼڹڽ ۘۏٳڒٛڹؿؙؠؙؚ۠۠۠۠۠۠۠ٷؿؙؿ ڡؙڗڹٵۼٛڽٳڶؠۼۯۏڣ ڡؙٳڐٵۼٛٳڶؠۼۯۏڣ ۏٳڎٵۼٛٳڵؽڡؚڔٳڂڛٳڹ ڣؠڹٳۼؾڶؽڹۼػڒۮٳڬ ڣؠڹٳۼؾڶؽڹۼۮڒڛ ڣؠڹٳۼؾڶؽڹۼۮڛ

अन-निसा 4

92.और एक विश्वासी के लिए नहीं कि वह मोमिन/विश्वासी का क़त्ल करे, परंतु ग़लती से कर दे और जो कोई किसी मोमिन/विश्वासी को गलती से कत्ल करे तो विश्वासी दास को आजाद/स्वतंत्र करे और उसके वुरसा (परिवार) को रक्त बहा चुका दें, सिवाय इसके कि वह माफ़ करके सदका/ख़ैरात कर दें, और यदि वह (मृतक) तुम्हारे शत्रु समुदाय से हो, परंत् वह मोमिन/विश्वासी हो, तो एक मोमिन/विश्वासी दास को स्वतंत्र करे, और यदि वह ऐसे (शत्र्) सम्दाय से हो जिसके साथ तुम्हारा एक समझौता हो, तो उसके वुरसा (परिवार) को रक्त बहा चुका दं. और एक मोमिन/विश्वासी दास को स्वतंत्र करे, बस जो कोई ये नहीं तो वह दो महीने निरंतर उपवास रखे. यह अल्लाह/भगवान की ओर से लौटने(का तरीक़ा) है, और अल्लाह/भगवान जानने वाला. हिकमत/तत्वदर्शिता वाला है।

الدِّسُاءِ ٤

अन-निसा 4

93.और जो कोई मोमिन को जानबूझ कर क़त्ल करे बस उसका प्रतिफल नरक है वह उसमे सदैव रहेगा और उसके ऊपर अल्लाह/भगवान का प्रकोप और उस (अल्लाह/भगवान) ने उसके लिए बड़ा अज़ाब तैयार रखा है।

अल-बक्ररा 2

179.और तुम्हारे लिए क़िसास/
बदल/ एवज़ में ज़िंदगी है
आय दानिशमंदों (यानी वो
लोग जो आयात की रूह को
समझते हैं) ताके तुम तक्वा/
परहिज़ करो

النِسَاءِ ٤

وَمَنِ يَقْتُلُمُؤُمِنًا مُتَعَيِّكًا فِحُزَاؤُهُ جَهَانَمُ خَلِكًا فِيهُا وَعَضِبَ اللهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهُ وَاعَلَّ لَهُ عَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهُ

ٱلْبَقَرَةِ ٢

ۅؘڷػؠؙٛڔڣۣٳڶۊڝؘٳڝؚڂڸۅۼ ؿٵ۠ۅڸؚٳڶڒڬؙڹٳڔڶۘۘۼڷڴؙؽؙڗؘۜڠٷڹ۞

मौद्रिक क्षति कारक जो आर्थिक और भावनात्मक नुकसान के निर्धारण करते हैं

आकस्मिक व्यय	भुगतान
1.मृत्यु/मौत।	100.0%
2.दो पसलियों या दो आंखों या एक पसली और एक आंख का नुक़सान होना।	100.0%
3.कोहनी से ऊपर बाज़ू का नुक़सान होना।	50.0%
4.बाज़् का कोहनी से नीचे का नुक़सान होगा।	45.0%
5.दोनों कानों से पूर्ण रूप से बहरापन होना।	50.0%
6.एक कान का पूर्ण रूप से बहरापन होना।	10.0%
7.एक आंख का नुक़सान होना।	50.0%
8.एक अंगूठे का नुक़सान होना।	17.5%
9.शहादत/गवाही की उँगली का नुकसान होना।	12.5%

मौद्रिक क्षति कारक जो आर्थिक और भावनात्मक नुकसान

के निर्धारण करते हैं

आकस्मिक व्यय	भुगतान
10.किसी भी द्सरी ऊँगली का नुक़सान होना।	5.0%
11.घुटने से ऊपर टांग का नुक़सान होना।	50.0%
12.घुटने से नीचे टाँग का नुक़सान होना।	35.0%
13.पांव के अंगूठे का नुक़सान होना।	5.0%
14.पांव की उँगली का नुक़सान।	3.0%
15.कोई अन्य स्थायी विकलांगता का होना।	5.0%
16.कोई अस्थायी विकलांगता का होना। (1 साल तक मुआवज़ा दिया जाएगा) प्रति वर्ष प्रति सप्ताह अधिकतम 1800 रुपये	0.6%
17.अस्थायी आंशिक विकलांगता। (1 साल तक मुआवज़ा दिया जाएगा) प्रति सप्ताह अधिकतम 600 रुपये	0.2%

काम करने वाले व्यक्ति के म्आवज़े/भ्गतान का कानून

मृत्यु 100 प्रतिशत उमर आमदनी तालीम/शिक्षा मुंशी

वह व्यक्ति जो की दुर्घटनावश मृत्यु और जीवन के क़सास/संबंध/
मुआवज़े/भुगतान की गणना रखता हो।

कल्चरल साइंस

दुनिया में औसत उमर 82 वर्ष है। दुनिया में काम करने की उमर 68 वर्ष है जो रिटायरमेंट की उम भी है।

यह उम के समय के अनुसार बदलती रहती हैं।

यदि एक व्यक्ति की 32 वर्ष की उम्र में मृत्यु हो जाए जबकि उसकी रिटायरमेंट की उम्र 68 वर्ष है।

तो उसके काम करने वाले 36 वर्ष की वार्षिक आय की ज़िम्मेदारी उसकी कंपनी के ऊपर है।

उदाहरण के तौर पर 100000 x 36 = 3600000 है।

काम करने वाले की क्षमता के अन्सार मेडिकल इलाज

नाक उसकी क्षमता के अनुसार मेडिकल इलाज।

कान दोनों कानों का बहरापन 50 प्रतिशत।

आंख एक आंख का 50 प्रतिशत और दोनों आंखो का 100

प्रतिशत।

दांत उसकी क्षमता के अन्सार मेडिकल इलाज।

मुआवजा/भुगतान सिर्फ उन शारीरिक अंगों का है जो प्रभावित हुए हों या जिससे उसके जीवन में परिवर्तन हो गया हो। यदि कोई स्टार या मीडिया का हस्ती हो तो उनका कॉस्मेटिक चोट/ ज़ख्म उसकी कमाई को प्रभावित करता है।

स्थायी चोट/ज़ख्म 5 प्रतिशत उसकी वार्षिक कमाई का।

अस्थायी चोट/ज़िंख्म अगर वह काम नहीं कर सकता तो उसको 52 सप्ताह या 1 वर्ष तक वेतन दी जाए और यदि वह काम कर सकता है तो उस को 0.6 प्रतिशत वेतन प्रदान किया जाए।

27.और उन पर आदम के दो बेटों की भविष्यवाणी हक के साथ तिलावत/पाठ कर दे। जब उन दोनों ने (अल्लाह/भगवान की) समीपता प्राप्त करने के लिए त्याग/बिलदान अर्पण किया, बस उसमें से एक का स्वीकार हुआ और दूसरे का स्वीकार नहीं हुआ। उसने कहा मैं तुझे अवश्य हत्या कर दूंगा। उसने कहा निश्चित ही अल्लाह/भगवान तक्वा/परहेज करने वालों से स्वीकार करता है।

28.यदि तू मुझे हत्या करने के
लिए मेरी ओर हाथ बढ़ाएगा
तो मैं तुझे हत्या करने के
लिए तेरी ओर हाथ नहीं
बढ़ाऊंगा। निश्चित ही मैं
अल्लाह रब्बुल आलमीन/संसारों
के पालनेवाले भगवान से डरता
हूँ।

29.मैं इच्छा करता हूँ के तू मेरे और अपने अपराधों के साथ ठहर जाए। और तू आग (में जलने)वालों मे से हो जाए, अत्याचारियों का यही प्रतिफल है।

ٱلْمَآئِلَةِ ه

وَاتُلُ عَلَيْهِ مُرِنَبَا ابْنَىٰ اَدَمُ بِالْحَقِّ إِذْ قَرَّبَاقُرُبَانًا وَلَمُ لِيَقْبَلُ مِنَ اَحَدِهِ مَا وَلَمُ لِيَقْبَلُ مِنَ الْحَرِّ قال إِنْمَا لِيَقَبَّلُ اللهُ مِنَ الْمُتَقِيْنَ ﴿

كَيْنُ بَسَطْتُ إِلَّى يَكَاكَ لِتَقْتُلَخِيُ مَّأَ أَنَابِبَاسِطٍ تَيْنِ كَالِمُكَ لِاقْتُلُكَ إِنِّى آخَافُ الله رَبَّ الْعَلَمِينُ ۞

إِنِّ اُرِيْدُانَ بَنُوْا بِأَثْرِى وَاثْمِكَ فَتَكُوْنِ مِنُ اَصْلِحِ التَّارِّ وَذٰلِكَ جَزْ وُالظّٰلِمِينَ ﴿

30.बस उसके नफ़्स/मनोभाव ने उसको सहमत करके अपने भाई की क़त्ल करा दिया, बस उसकी सुबह हानि/घाटा उठाने वालों मे से हुई।

ٱلْمَاتِكَةِ ٥

فَطَوِّعَتْ لَهُ نَفْسُهُ قَتْلَ أَخِيلِهِ فَقَتَلَهُ فَاصَبِحَ مِنَ الْخُسِرِيْنَ ﴿

31.बस अल्लाह/भगवान ने कौआ नियुक्त किया जो धरती में चर्चा करता है (अर्थात कौवा द्वारा रोने के लक्षण) ताकि वह उसे दिखा सके कि अपने भाई की चोट/बुराई को कैसे पीछे डाला जाता है। कहने लगा, धिक्कार है! क्या मैं इतना असमर्थ हूँ कि इस कौए के समान भी नहीं हो सका, कि बस मैं अपने भाई की चोट/बुराई को पीछे डाल देता बस उसकी सुबह पछताने वालों मे से हुई।

فَبَعَثَ اللَّهُ عُرَابًا يَّبُحَثُ فِي الْأَرْضِ لِيُرِيهُ كِيُفَيُ فَعُ الْأِرْضِ قَالَ لِوَٰيُكِنَّ الْجَنَّرُثُ اَنُ اَكُوُنَ مِثْلَ هَٰذَا الْغُرَابِ فَا وَارِي سَوْءَةَ اَخِيْ فَاصْبَحَ مِنَ النَّيْ مِيْنَ شَّا

32.उस समय के पश्चात से हमने इसराएल के बेटों पर लिख दिया कि निश्चय ही जो भी उस नफ्स/मनोभाव की हत्या करेगा (जिसने त्याग/बलिदान करके अल्लाह/भगवान की समीपता प्राप्त की है) जो बिना नफ़्स/मनोभाव के है (अर्थात निर्दोष) या धरती पर फ़साद/बिगाइ किए बिना है, तो बस निश्चय ही यह उस व्यक्ति के समान है जिसने समस्त मानव जाति का क़त्ल कर दिया हो। और जो कोई जीवन देगा उस(मनोभाव) को तो निश्चय ही यह ऐसा है जैसा के निसंदेह उस ने मानव जाती को जमा कर के जीवन दिया और वास्तव में उनके पास हमारे रस्ल/संदेशवाहक स्पष्टीकरण लेकर आ चुके हैं। फिर निश्चय ही उसके पश्चात भी उनमें से बह्संख्यक वही हैं जो धरती पर (क़त्ल/हत्या में) अधिक है।

اَلْمَاتِكُونَةِ ٥

مِنُ أَجُلِ ذَٰلِكَ ۚ
مَنُ أَجُلِ ذَٰلِكَ ۚ
كَتُبُنَا عَلَى بَنِ أَسْرَاءِيُلَ
انَّا مَنُ قَتَلَ
انَّا مَنُ قَتَلَ
افَفُسَا إِنْ الْآرْضِ
افَوْسَا إِنْ الْآرْضِ
الْآرُضِ الْآلِكِ التَّاسُ جَمِيْعًا الْآلِكُ وَاللَّآلِ التَّاسُ جَمِيْعًا الْآلِكُ وَاللَّآلِ التَّاسُ جَمِيْعًا الْآلِكُ وَاللَّآلِ التَّاسُ جَمِيْعًا الْآلِكُ وَاللَّآلِ التَّاسُ جَمِيْعًا الْآلُونِ اللَّاسُ جَمِيْعًا الْآلُونِ اللَّالُ اللَّآلِ اللَّالِ اللَّالِ اللَّالِ اللَّاللَّةِ اللَّالِ اللَّالِي اللَّالِي اللَّالِي اللَّالِي اللَّالِي اللَّالِي اللَّالِي اللَّالِي اللَّالِي اللَّالَّ اللَّالَّ اللَّالَّ اللَّالَّ اللَّالَّ اللَّالَّ اللَّالِي اللَّالِي الْلِي الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ اللَّالَّ الْمُنْ الْمُنْ اللَّالَّ الْمُنْ ا

अल-क़सस 28

14.और जब (मूसा) परिपक्वता
(की उम) को पहुंचा और ठीक
ठाक/बराबर हुआ हमने उसको
हुक्म और इल्म/ज्ञान
दिया। और इसी तरह हम
अच्छाई करने वालों को
प्रतिफल देते हैं।

15.और वह (मूसा) अल-मदीना में ऐसे समय प्रवेश हुआ जब वहाँ के लोग असावधानी में थे बस उसने दो आदमियों को लड़ते हए पाया, एक उसके विश्वासी समूह में से था और दूसरा उसके द्श्मन के समूह में से था,(यानि अविश्वासी) बस जो उसके समूह में से था उसने अपने दुश्मन(के समूह) के विरुद्ध उसकी सहायता चाही बस मूसा ने उसको घूंसा मारा और (उसका जीवन) उस पर पुरा कर दिया। उसने कहा यह शैतान के कर्म में से है। निश्चित ही वह स्पष्ट तौर पर पथभ्रष्ट करने वाला द्श्मन है।

اَلْقَصَصِ ٢٨

ٷڵۛؾٵڹۘڵۼؘٲۺؙڰؘ؋ ۅٳڛۘؾۅٛٙؽٳػؽڹ۠ۮؙۘڂڂؠٵۊۜۘۼؚڶؠٵ ۅؙؙۘڲڶٳڮػؚٛڒؚؽٳٮؙڰؙڛڹؚؽڹٙ

وَدَخُلُ الْمُدِينَةَ عَلَى حِيْنِ غَفْلَةٍ مِّنَ اَهُلِهَا فَوَجُلُ فِيْهَارَجُلَيْنِ يَقْتَتِلِنَّ هُذَامِنَ شِيْعَتِهِ وَهِنَ امِنَ عَدُوّةٍ فَاسْتَغَاتُكُ الَّذِي مِنْ شِيْعَتِهِ فَاسَتَغَاتُكُ الَّذِي مِنْ عَدُوّةٍ فَالَهُ عَلَّ أَمْنِ مَنْ عَلَى الشَّيْطِنِ قال هٰ ذَا مِنْ عَلَى الشَّيْطِنِ إِنَّهُ عَلُ وَمُّضِلٌ مَّبِيْنِ فَيَ

अल-कसस 28

16.उसने कहा कि मेरे रब/पालनेवाले निश्चित ही मैंने अपने नफ़्स/ मनोभाव पर अत्याचार कर लिया, बस मुझे क्षमा कर दे। बस उसने उसको क्षमा कर दिया। निश्चित ही वह क्षमा करने वाला, रहम/कृपा करने वाला है।

युसुफ़ 12

53.और मैं अपने नफ़्स/मनोभाव को बरी/मुक्त नहीं करती निश्चित ही नफ़्स/मनोभाव तो बुराई के साथ आदेश करता है परंतु जिस पर मेरा रब/ पालनेवाला रहम/कृपा करे। निश्चित ही मेरा रब/पालनेवाला क्षमा करने वाला, रहम/कृपा करने वाला है।

اُلْقَصَصِ ٢٨

قَالَ رَبِّ إِنِّى ظَلَمُتُ نَفْسِى فَاغْفِرْ لِٰ فَغَفَرُ لَكُ ۚ إِنَّكَ هُوالْغَفُوْرُ الرِّحِيْمُ ۞

مور پورسف ۱۲

ٷۘۘۘٵۘٲؙڹڗٷؙٮٛڡؙٝڛؽؖ ٳڹٞٳڵؿؙؙؙڛؘڰػٵۯۘۜؗؗٷؠٳڶۺؙٷٙ ٳڰؽٵۯڿؚ؋ڒڽؖ ٳڹۜڒڽؚڹٚٛۼڡؙٷڒڗڿؚؽؙۄ۠۫ۛ۫۫

अल-अंबिया 21

87.और मछली वाला (अर्थात
यूनुस) जब गुस्से/क्रोध में चला
और उसने कल्पना की कि हम
उस पर कदापि कुदरत/नियंत्रण
नहीं रखते, बस उसने अंधेरे
में पुकारा यह कि कोई भगवान
नहीं है सिवाय तू ही है, तेरा
ही गुणगान है, निश्चित ही
मैं अत्याचारियों में से हो

ٱلْأَنْبِكِيَاءِ ٢١

وَذَاالنَّوْنِ اِذَٰذَهَ هَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنْ لَكُنْ نَقْلِ رَعَلَيْهِ فَنَادَى فِي الظُّلُمٰتِ اَنْ لَا اللَّ اللَّ النَّالُمُنِكَ اللَّالِ اللَّالَةِ اللَّالَةِ اللَّالِمِيْنَ الظِّلِمِيْنَ الطِّلِمِيْنَ الطَّلِمِيْنَ الطَّلِمِيْنَ الْسَّ

नूह 71

28.नूह ने कहा ऐ मेरे रब/
पालनेवाले क्षमा कर दे मुझे
और मेरे माता पिता को और
जो कोई मेरे घर में ईमान/
विश्वास वाला होकर प्रवेश
हुआ और ईमानवाले/विश्वासी
पुरुषों और ईमानवाली/विश्वासी
स्त्रियों को (क्षमा कर दे)। और
तू नहीं बड़ा अत्याचारियों को
सिवाय विनाश के।

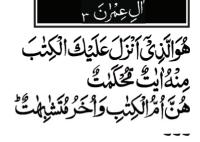
نُوْجِ ٧١

ڒۘؾٳۼٝڣۯڮٛۘٷڸۘۘٷٳڶؚڮ؆ۜ ٷڸڬؙڹؙۮڪۘڶۘۘڹؽؾؽۘڡؙٷٝڡؚێٞٵ ٷڵؚڵڡؙٷٙڡڹؽ۬ڹٷٲٮٛؠٷٝڡڹ۬ؾؚ ٷڵاٷڒۮٟٳڵڟٚڸؚؠؠؙؽٳڵؖٵۺٵڴٳ۞ۧ

प्रश्न और उत्तर

आल-ए-इमरान 3

7.वह ही है जिसने तुझ पर
किताब अवतरित की उसमें
से मुहकुमात/हुकुम वाली
आयात/निशानियाँ हैं| वह
किताब की माँ हैं और द्सरी
मुताशाबिहात/मिलती जुलती
(आयात/निशानियाँ) हैं........



प्रश्न1.आपने लेक्चर में बताया है कि तौरात/क़ानून है जो किताब की मां है जिसमे सभी शासन वाली आयात/निशानियां हैं उनके अलावा मुताशाबिहात/मिलती-जुलती आयात भी हैं इसके बारे में कुरआन से उदाहरण देकर स्पष्टीकरण दीजिए?

जारी है.....

अज़-ज़ुमर 39

23.अल्लाह/भगवान ने बेहतरीन हदीस/वाक्या/घटना अवतरित किया मताशाबिहात/मिलती जुलती किताब दोहराई हई जो लोग अपने रब/पालनेवाले से इरते हैं उनकी खालों के रौंगटे उससे खडे हो जाते हैं फिर अल्लाह/भगवान की याद की ओर उनकी खालें और उनके दिल नरम हो जाते हैं वह अल्लाह/भगवान का मार्गदर्शन है उसके साथ जिसको वह चाहे मार्गदर्शन देता है। और जिसको अल्लाह/ भगवान पथभ्रष्ट कर दे फिर उसके लिए कोई मार्गदर्शन देने वाला नहीं है।

अल-बक़रा 2

183.ऐ वह लोगो जो ईमान/विश्वास
लाए हो तुम पर उपवास/व्रत
लिख दिए गए जैसा कि तुमसे
पहले लोगों पर लिखे गए ताकि
तुम तकवा/परहेज़ करो।

اَلزُّمَرِ ٣٩

ٱللهُ نَزُلَ الْحَسَنِ الْحَرِينَ وَكُرِينَ وَكُرِينَ وَكُرِينَ الْمُعَافِقَ الْحَرِينَ وَكُرُونَهُ الْمُؤَدُّ الَّذِينَ يَغَشَوْنَ وَكُونُهُمْ وَقُلُونُهُمْ وَقُلُونُهُمُ وَقُلُونُهُمْ وَقُلُونُهُمْ وَقُلُونُهُمْ وَقُلُونُهُمْ وَقُلُونُهُمْ وَقُلُونُهُمْ وَقُلُونُهُمُ وَقُلُونُهُمْ وَقُلُونُهُمُ وَقُلُونُهُمْ وَقُلُونُهُمُ وَقُلُونُهُمُ وَقُلُونُهُمْ وَقُلُونُهُمْ وَقُلُونُهُمْ وَقُلُونُهُمْ وَقُلُونُهُمْ وَقُلُونُهُمُ وَقُلُونُهُمْ وَقُلُونُهُمُ وَقُلُونُهُمْ وَقُلُونُهُمْ وَقُلُونُهُمْ وَقُلُونُهُمْ وَقُلُونُهُمُ وَلُونُهُمُ وَقُلُونُهُمُ وَلَا فَاللّهُمُ وَلَا فَاللّهُمُ وَلَا فَاللّهُمُ وَلَائِهُمُ ولَائِهُمُ وَلَائِهُمُ وَلَائِهُمُ وَلَائُونُونُ وَلِكُونُ اللّهُ ولَائِهُمُ ولَائِهُمُ ولَائِهُمُ ولَائِهُمُ ولَائِهُمُ ولَائِهُمُ ولَائِلُونُ اللّهُ اللّهُ ولَائِلُونُ اللّهُ ولَائِلُونُ اللّهُ ولَائِلُونُ اللّهُ ولَائِلُونُ اللّهُونُ ولَائِلُونُ اللّهُ اللّهُ ولَائِلُونُ اللّهُ ولَائِلُونُ اللّهُ ولَائِلُونُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُونُ اللّهُ اللّهُ

اَلْبَقَرَةٍ ٢

ڲٲؿ۠ۿٵڷڵۯؠؙؽؗٳؙڡؙٮؙٷٳ ڮڗؙؚٮؘۘۘۼۘڵؽڴٷٳڶڞؚؾٵڡؙ ػؠٵڮڗؙٮؚۼڶؽٲڷؙۯؠؙؽؘڡؚڹٛڡؿڶؚڮۿؙ ڵ**ۼ**ڷٞڴۿؙڗؾٞڠٷٛؽ۞۠

जारी है.....

अल-बक़रा 2

185.रमजान वह महीना है जिसमें अल-कुरआन/खास पढाई अवतरित की गई लोगों के मार्गदर्शन के लिए और मार्गदर्शन और फर्क/अंतर/भेद. करने वाले से स्पष्टीकरण है। बस जो कोई त्ममें से इस महीने का गवाह/साक्षी हो बस चाहिए कि वे अवश्य उसके रोजे/उपवास/वृत रखे। और जो कोई मरीज़/बीमार हो या यात्रा पर हो बस वे दूसरे दिनों में गणना प्री करे अल्लाह/भगवान तुम्हारे साथ तन्गी का संकल्प नहीं रखता, और ताकि त्म गणना प्री करो और अल्लाह/ भगवान की बढ़ाई करो उस पर जो उसने तुम्हें मार्गदर्शन दिया है। और संभवतः कि तुम आभार व्यक्त करो।

اَلۡبَقَوَۃِ ٢

شَهُرُرَمُضَانَ الَّنِيَّ انْزِلَ فِيْهِ الْقُرُّانُ هُكَّى لِلنَّاسِ وَبَيِّنْتِ مِّنَ الْهُلَى وَالْفُرُقَانَ فَمَنْ شَهُرَ مِنْكُوْ الشَّامُ وَالْفُرُقَانِ وَمِنْ كَانَ مَرِيْضًا اَوْعَلَى سَفَر فَوَيْكَ اللَّهُ بِكُو الْيُسْرَ وَلِكُنْ اللَّهُ بِكُو الْيُسْرَ وَلِتُكَرِّمُ وَاللَّهِ كَانَةً وَلِتُكَرِّمُ وَاللَّهِ كَانَةً وَلِتُكَرِّمُ وَاللَّهِ كَانَةً وَلِتُكَرِّمُ وَاللَّهِ كَانَةً عَلَى مَاهُ لَى كُورُ وَلِتُكَرِّمُ وَاللَّهِ كَانَةً عَلَى مَاهُ لَى كُورُ وَلِتُكَرِّمُ وَاللَّهِ كَانَةً عَلَى مَاهُ لَى كُورُ

अन-निसा 4

1.ऐ लोगों अपने रब/पालनेवाले से परहेज़ करो, जिसने तुम सबको एक नफ़्स/मनोभाव से तख़्लीक़/निर्माण किया और उस (नफ़्स/मनोभाव) से उसका जोड़ा बनाया और उन दोनों से बहुत सारे पुरुष और स्त्री फैला दिये और अल्लाह/भगवान और अरहाम/गर्भ से परहेज़ करो जो तुमसे उसके साथ प्रश्न करेगा निश्चित ही अल्लाह/भगवान तुम पर निरीक्षक है।

الدِّسُاءِ ٤

يَايُهُاالنَّاسُاتَّقُوْارَبُّكُمُّالَّانِيُّ حَكْقَكُمْ مِّنَ نَّفْسُ وَاحِكُمُّ وَجَكَقَ مِنْهَازُوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيْرًا وَنِسَاءً * وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي بَسَاءُ نُوْنَ بِهِ وَالْاَرْحَامَرُ إنَّ اللَّهُ كَانَ عَلَيْكُمُ مُرَوِيْبًا ا

अन-निसा 4

15.और तुम्हारी स्त्रियों में से जो फ़ाहिशा/अश्लीलता करते हुए आयें बस तुममें से उन पर चार गवाह तलाश/तलब करो। बस यदि वे गवाही दें बस उनको घरों में रोक लो यहाँ तक की उन पर मृत्यु पूरी हो जाये या अल्लाह/भगवान उनके लिए कोई मार्ग बना दे।

النِسَاءِ ٤

وَالْتِي يَاتِيْنَ الْفَاحِشَةَ مِنُ نِسَا يِكُمُ فَاسُتَشُهِ لُوْاعَلَهُ نَّ اَرْبَعَةً مِّنُكُمْ فَانُ شَهِ لُوْا فَامُسِكُوْهُ نَ فِي الْبُيُوتِ كُلِّي يَتُوفْهُ نَ فِي الْبُيُوتِ كِلِّي يَتُوفْهُ نَ الْهُوتُ اَوْ يَجْعَلَ اللهُ لَهُ نَ الْهُوتُ

अल-इसरा 17

32.और तुम ज़िना/व्यिभिचार के निकट मत जाओ निश्चित ही वह फ़ाहिशा/अश्लीलता है। और बुराई का मार्ग है।

اَلْاسْراءِ ١٧

ۅؘۘۘڵٳٙؾٞڡٚۯۑۘٷٳٳڶڒؚٙڬٙٳڹۜڬٵڹڣؘڶڿۺؘڐؖ ۅۘڛٵءٛڛۑؚؽڵؖڒ؈

अन-निसा 4

16.और तुम(पुरषों या स्त्रियों) में से दो उसको (अश्लीलता) करते हुए आएं तो उनको अज़ीयत/पीड़ा दो। बस यदि वे दोनों तौबा कर लें और वे दोनों सही कर लें, तो उन से अनदेखा करो निश्चित ही अल्लाह/भगवान तौबा स्वीकार करने वाला, रहम/कृपा करने वाला है।

اَلدِّسُاءِ ٤

ۉٳڷڬؙڹؽٲڗڸ۬ۻٵڡؚڹٛػۮؙ ڡٵۮؙۉۿؠٵ ڡٵؽؙڗٵڹٵۉٳڞڮٵ ڡٵۼڔۻٛۅ۬ٳۼٮؙٛۿؠٵ ٳٮۜٞٳڛٚؗۮػٳڹۘڗۘٷؚٳٵٜڒڿؽٵ۞

अन-नूर 24

2.ज़ानिया/व्याभिचारी स्त्री और ज़ानी/व्याभिचारी पुरुष उनमें से हर एक को सौ कोड़े लगाओ और यदि तुम अल्लाह/भगवान और अंतिम दिन पर विश्वास रखते हो तो अल्लाह/भगवान के निर्णय के विषय में उनसे किसी प्रकार की नरमी का व्यवहार ना करो, और चाहिए कि विश्वासियों का एक समूह उन दोनों की सज़ा की गवाही दे।

اَلنُّوْدِ ٢٤

ٱلزَّانِيَةُ وَالزَّانِ فَاجُلِدُ وَاكُلَّ وَاحِرِ مِّنْهُمَ مِائَةَ جُلْدَةٍ وَلَاتَا خُنْكُمْ هِارَافَةٌ فَوْمِنُونَ اللَّهِ الْأَوْلِيَّةُمْ وُلْيَشْهَنْ مَنَ اللَّهِ وَالْيَوْمِ الْأَخِرِ طَلِيفَهُنْ عَنَ اللَّهِ وَالْيَوْمِ الْأَخِرِ طَلِيفَهُنْ عَنَ اللَّهِ وَالْيَوْمِ الْأَخِرِ

अन-नूर 24

3.ज़ानी/व्यभिचारी पुरुष विवाह ना करे सिवाय ज़ानिया/व्यभिचारी या मुशरिक/सहभागिता करने वाली स्त्री से और ज़ानिया/ व्यभिचारी स्त्री विवाह ना करे सिवाय जानी/व्यभिचारी या मुशरिक/सहभागिता करने वाले पुरुष के और विश्वासियों पर वह (व्यभिचारी व सहभागी) हराम किए गए हैं।

ٱلنُّوْدِ ٢٤

ٱلزَّانُ لَايَنْكِحُ الآزَانِيَّةَ ٱوْمُشْرِكَةً وَّالزَّانِيَةُ لَايَكِحُهَا الْآزَانِ اَوْمُشْرِكٌ وَحُرِّمُ ذٰلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ۞

रजम/संगसार करना।

यह शब्द क़ुरआन में 14 बार आया है, जिसमें रजम/संगसार शुदा 6 बार आया है और रज्मन 1 बार आया है।, क़ुरआन में अल्लाह/ भगवान ने रजम/संगसार शैतान को किया है। और ग़ैर ईमान/ विश्वास वालों ने रजम/संगसार का संकल्प रस्लों/संदेशवाहकों और ईमान/विश्वास वालों के ऊपर किया है। और कहने पर भी ईमान/ विश्वास वालों ने ग़ैर ईमान/विश्वास वालों पर रजम/संगसार करने का संकल्प नहीं किया है।

बाइबिल के अनुसार यहूदियों और ईसाइयों के विश्वास।

लैव्यव्यवस्था 20:10

"यदि कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी की पत्नी के साथ यौन सम्बन्ध करता है तो स्त्री और पुरुष दोनों अनैतिक सम्बन्ध के अपराधी हैं। इसलिए स्त्री और पुरुष दोनों को मार डालना चाहिए।

लैव्यव्यवस्था 20:11,12,13,14

यदि कोई स्त्री-पुरुष करता है कौटुम्बिक व्यभिचार या किसी भी पुरुष के पास समर्लेगिकता को मौत के घाट उतार दिया जाना चाहिए। लैव्यव्यवस्था 21:9

"यदि याजक की पुत्री वेश्या बन जाती है तो वह अपनी प्रतिष्ठा नष्ट करती है तथा अपने पिता को कलंक लगाती है। इसलिए उसे जला देना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 22:20,21

"परन्तु यदि उस कन्या के कुंवारीपन के चिन्ह पाए न जाएं, और उस पुरूष की बात सच ठहरे," "तो वे उस कन्या को उसके पिता के घर के द्वार पर ले जाएं, और उस नगर के पुरूष उसको पत्थरवाह करके मार डालें।

व्यवस्थाविवरण 22:25

परन्तु यदि कोई पुरूष किसी कन्या को जिसके ब्याह की बात लगी हो मैदान में पाकर बरबस उस से कुकर्म करे, तो केवल वह पुरूष मार डाला जाए, जिस ने उस से कुकर्म किया हो।"

निर्गमन 22:9

जो किसी जानवर के साथ यौन-संबंध रखता है उसे हर हाल में मौत की सजा दी जानी चाहिए।

शैतान को रजम/संगसार करने के प्रमाण

आल-ए-इमरान 3:36

मरयम की माँ का मरयम और उसकी संतान को शैतान रजम/संगसार किए हुए से अल्लाह/भगवान की शरण में देना।

हिज्र 15:16,17

अल्लाह/भगवान आकाश के गुम्बदों की हर शैतान संगसार किए हुए से हिफ़ाज़त/सुरक्षा कर रहा है।

अन-नहल 16:98

हर इंसान का क़ुरआन पढ़ने से पहले शैतान संगसार किए हुए से अल्लाह/भगवान की पनाह/शरण मांगना।

साद 38:77

बशर/व्यक्ति को सजदे/साष्टांग से इनकार पर अल्लाह/भगवान का शैतान संगसार किए हुए को निकालना।

मुल्क 67:5

अल्लाह/भगवान का आकाश के दीपों का शैतान संगसार किए हुए से हिफ़ाज़त/सुरक्षा करना।

तकवीर 81:25

रस्ल/संदेशवाहक का क़ौल/कहा हुआ शैतान संगसार किए हुए के क़ौल/कहे हुए के साथ नहीं है।

जारी	<u></u>
------	---------

गैर ईमान/विश्वास वालों का रसूलों/संदेशवाहकों और ईमान/ विश्वास वालों को रजम/संगसार करने वालों का संकल्प रखने वालों के प्रमाण

अश-शुआरा 26:116 ईमान/विश्वास ना लाने वालों का नूह को संगसार करने का संकल्प करना।

हूद 11:91 ईमान/विश्वास ना लाने वालों का शोएब को संगसार करने का संकल्प करना।

मरयम 19:46 इबराहीम के सहभागिता करने वाले पिता का इबराहीम को संगसार करने का संकल्प करना।

यासीन 36:18 ईमान/विश्वास ना लाने वालों का रस्लों/संदेशवाहकों को संगसार करने का संकल्प करना।

दुखान 44:20 फ़िरओन का मूसा को संगसार करने का संकल्प करना।

कहफ़ 18:20 असहाबे कहफ़ का यह स्वयं प्रकट करना कि ईमान/विश्वास ना लाने वाले उन्हें संगसार करने का संकल्प रखते थे।

अत-तौबा 9

74.वह अल्लाह/भगवान के साथ हल्फ़/शपथ उठाते हैं कि उन्होंने नहीं किया। और वास्तव में उन्होंने कुफ़/इनकार का कलमा/ शब्द कहा और इस्लाम/सलामती/ लाने के पश्चात उन्होंने कफ्र/ डनकार किया और उन्होंने रुचि रखी इसके साथ जो वह कदापि नहीं पहँच सके। और उन्होंने प्रतिशोध नहीं लिया सिवाय यह कि अल्लाह/भगवान और उसके रसूल/संदेशवाहक ने उन्हें अपने फजल/वरदान से गनी/धनी कर दिया था। बस यदि वे तौबा करें वह उनके लिए भला होगा। और यदि वे पलट जाएं अल्लाह/भगवान उन्हें अजाब/सजा देगा दर्दनाक अज़ाब/सज़ा दुनिया और अंत में। और उनके लिए धरती में न कोई औलिया/रक्षकों में से होगा और न ही मददगार/ सहायक में से।

اَلتَّوْرَةِ ٩

عَـُـلِفُوْنَ بِاللهِ مَاقَالُوْلُوْ وَلَقَلُ قَالُوْا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوْا بَعْلَ اسْلاَمِهِمُ وَمَانَقَكُوْ الْكَالُونَ اَغْنُدهُمُ الْاَ وَمَانَقَكُوْ الْكَالُونَ اَغْنُدهُمُ اللهُ وَانَ يَتَوُلُوْ الْكَانُ فَضَـلِهِ فَالنَّ نَتَوُلُوْ الْكَانُ فَضَـلِهِ عَلَا اللَّهُ الْوَالْا خَرَةِ وَاللهُ مَاللَّهُ مُواللَّهُ وَمَالَهُمُ فِي الْاَرْضِ وَمَالَهُمُ فِي الْاَرْضِ مِنْ وَلِي قُولِا نَصِيدٍ فِي الْوَرْضِ مِنْ وَلِي قُولِا نَصِيدٍ فِي الْوَرْضِ

प्रश्न3.वह व्यक्ति जो ईमान/विश्वास लाने के पश्चात तिरस्कारी और काफ़िर/इनकार करने वाला हो जाता है तो ऐसे व्यक्ति के बारे में क़ुरआन के अनुसार क्या मृत्यु की सज़ा है?

अनादर/अपमान अर्थ:- अल्लाह/भगवान और उसके संदेशवाहक के साथ अनादर/अपमान करना

- 1) अल्लाह/भगवान और पवित्र वस्तुओं के बारे में अपवित्र या अश्रद्धापूर्वक बात करना।
- 2) अल्लाह/भगवान और उसके संदेशवाहक के लिये बुरा बोलना, बदनाम करना, कोसना और गाली देना।
- 3)ऐसा अपराध या अनादर/अश्रद्धा जो किसी व्यक्ति में भगवान के अधिकार या गुण का कल्पना करना।

बाइबिल के अनुसार यहूदियों और ईसाइयों के विश्वास।

लैव्यव्यवस्था 24:10-12

जो कोई अपने प्रभु परमेश्वर की निन्दा करे और उसे शाप दे वह पत्थर से मार डाला जाए।

लैव्यव्यवस्था 24:13-16

तब यहोवा ने मूसा से कहा, "तुम लोग उस शाप देने वाले को छावनी से बाहर ले जाओ; और जितनों ने वह निन्दा सुनी हो वे सब अपने अपने हाथ उसके सिर पर टेकें, तब सारी मण्डली के लोग उस पर पथराव करें। और तू इस्राएलियों से कह कि कोई क्यों न हो जो अपने परमेश्वर को शाप दे उसे अपने पाप का भार उठाना पड़ेगा। यहोवा के नाम की निन्दा करनेवाला निश्चय मार डाला जाए; सारी मण्डली के लोग निश्चय उस पर पथराव करें; चाहे देशी हो चाहे परदेशी, यदि कोई उस नाम की निन्दा करे तो वह मार डाला जाए।

अल-ह्जरात 49

- 1.ऐ वह लोगों को विश्वास लाए!
 तुम अल्लाह/भगवान और उसके
 रसूल/संदेशवाहक के हाथों के
 बीच अग्रसरता न करो और
 परहेज़ करो निश्चित ही अल्लाह/
 भगवान सुनने वाला, जानने
 वाला है।
- 2.ऐ ईमान वालों/विश्वासियों
 अपनी आवाज़ोंको नबी/
 भविष्यवक्ता की आवाज़
 पर ऊंची न करो और ना ही
 उससे ऊंची आवाज़ में बात
 करो क़ौल/कहे हुए के साथ
 जैसे कि तुममें से कुछ, कुछ
 से ऊंची आवाज़ में बात
 करते हैं यह कि तुम्हारे संपूर्ण
 कर्म नष्ट हो जाएं और तुम्हें
 इसका आभास भी ना हो।

أنحجزتِ ٤٩

ؽٵؿۿٵڷۯؽؽٵڡٮؙٛٷٳ ڵٳؾؙڡؙػڔۜڡؙٷٳڹؽ۬ڹؘؽؼؠٵۺۨؖۨ؋ ٷڔڛؙٷٙڸ؋ۅٙٳؾٞڡؙۅٳٳۺؖڎ ٳٮۜٛٳۺؙڎڛڡؚؽۼۘٛۼڵؚؽڠ۞

> يَايَّهُاالَّذِيْنَامُنُوْا لَا تُرْفَعُوُّا اَصْوَاتُكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيّ وَلِا يَجُهُرُوْالَا اِلنَّاقِوْلِ كَجَهْرِيعُضِكُوْلِيَانُقُوْلِ اَنْ يَحُبُطُ اَعْمَالُكُوْ وَانْتُوْلُالْتُشْعُرُوْنَ ۞

प्रश्न4.क़ुरआन ऐसे व्यक्ति की मृत्यु की सज़ा के बारे में क्या कहता है जो गुस्ताख़े रसूल हो या उनकी मर्यादा में अपमान करता हो?

अत-तौबा 9

61.और उनमें से वह लोग जो नबी/भविष्यवक्ता को अजीयत/ पीडा देते हैं और वे कहते हैं कि वह सिर्फ़ कान है (अर्थात वह कान का कच्चा है)। कह दे उसका कान (कान देता है) तुम्हारी भलाई के लिए। वह ईमान/विश्वास रखता है अल्लाह/ भगवान के साथ और वह र्डमान/विश्वास रखता है ईमान/ विश्वास वालों के लिए और उनके लिए रहमत/कृपा है जो त्म में से ईमान/विश्वास लाते हैं। और वे लोग जो अजीयत/ पीड़ा देते हैं अल्लाह/भगवान के रस्ल/संदेशवाहक को उनके लिए दर्दनाक अजाब/सजा है।

अल-मोमिनून 23

70.या वह कह रहे हैं उसके साथ जुनून/पागलपन है। बल्कि वह उनके पास हक़ के साथ आया और उनके अधिकतर हक़ के लिए अप्रियता करने वाले हैं।

اَلتَّوْرَةِ ٩

وَمِنْهُمُ الْكِنِيْنَ يُؤْذُوْنَ النَّبِيَّ وَيُقُوْلُوْنَ هُوَاُذُنَّ مُّ قُلُ اُذُنُ حَيْرِ لُّكُمُ يُؤْمِنُ بِاللّهِ وَيُؤُمِنُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَرَحْمَةً لِلْكِنْ يُنَ امْنُوْا مِنْكُمْرُ وَالْكِنِيْنَ امْنُوْا مِنْكُمُرُّ وَالْكِنِيْنَ الْمُؤْمِدُونَ رَسُوْلَ اللّهِ لَهُ مُعَذَابٌ إِلِيْمُ اللّهِ لَهُ مُعَذَابٌ إِلِيْمُ اللّهِ لَهُ مُعَذَابٌ إِلِيْمُ اللّهِ اللّهِ لَهُ مُعَذَابٌ إِلَيْمُ اللّهِ لَهُ مُعَذَابٌ إِلَيْمُ اللّهِ لَهُ مُعَذَابٌ إِلَيْمُ اللّهِ لَهُ مُعَذَابٌ إِلَيْمُ اللّهِ اللّهِ لَهُ مُعَذَابٌ إِلَيْمُ اللّهِ اللّهُ لَهُ مُعَذَابٌ إِلَيْمُ اللّهُ اللللّهُ الللّهُ اللّهُ اللللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللللّهُ الللّهُ الللللللّهُ الللّهُ الللللّهُ الللللّهُ الللللّهُ اللللللّهُ الللللْلْمُ اللللّهُ اللللللْمُ اللّهُ الللّه

المؤمنون ٢٣

ٳؘؗؗۿۯڽڠؙٷڵٷڹؠ؋ڿڹۜڐٛ ڹڵڿٵۼۿؙۑٳڬٛۊ ٷؙؙؙؙؙٟٷڗؙۿؙۯڶؚڶڮٙۨٷۜڮ۠ۿۏؽٙ

अल-हिज्र 15

6.और वे कहते हैं ऐ वह शख्स/
व्यक्ति! जिस पर ज़िक्र/उल्लेख/
स्मरण अवतरित किया जाता
है निश्चित ही तू अवश्य
मजनून/पागल है।

अल-अनफ़ाल 8

30.और जब उन लोगों ने जिन्होंने
कुफ़/इनकार किया तेरे लिये
तदबीर/योजना की कि वे तुझे
जमा दें या वे तुझे क़त्ल कर
दें या वे तुझे निकाल दें। और
वह योजना करते हैं और
अल्लाह/भगवान भी योजना
करता है। और अल्लाह/भगवान
श्रेष्ठ योजना करने वाला है।

आल-ए-इमरान 3

21.निश्चित ही जो अल्लाह/भगवान की आयात/निशानियों के साथ कुफ़/इनकार करते हैं और वे हक़ के अतिरिक्त निबयों/ भविष्यवक्ताओं में से जो न्याय के साथ आज्ञा करते हैं उनको क़त्ल करते हैं। बस उसको दर्दनाक अज़ाब के साथ खुशखबरी/शुभ सूचना दे दो।

آڻِجئرِ ١٥

ۅؘۘۊٙڵٷٳؽۜٲؽۿٵڷۮؽ ڹ۠ڒؚڵعؘڮڮٵڶڕٚڪٛڔ ٳٮۜٚڮڵۮڿڹٛٷٛڽ۠ڽٞ

آلُائْفَالِ ٨

وَاذْ يَهُكُرُبِكَ الَّذِيْنَكَفُرُوْا لِيُثْبُتُوْكَ اوْ يَقْتُلُوْكَ اَوْ يُخْرِجُوْكَ مُ وَيَهُكُرُوْنَ وَيَهُكُرُاللّٰهُ وَيَهُكُرُوْنَ وَيَهُكُرُاللّٰهُ وَاللّٰهُ كَيْرُالْهُ كِرِيْنَ ۞

ال عِمْرِنَ ٢

ٳؾۜٲڷڹؽڹۘؽڬڡٛۯؙۅٛڹؠٳؽؾؚٵۺٚڡؚ ۅۘؽڡٞؿؙڰؙۅٛڹٵڵۺۜؠؠۜڹڣؽڔڮؚۊ ٷؿڡٞؿڰؙۅؙڹٵڷڹؽڹ ؽٲۿۯۅٛڹؠٳڶڡؚۛٮؙڟؚڡڹؘٳڵؽۄۣڛ ڡؙۺؚٞۯۿؙؙۿڔۼؚڬٳڽؚٳڸؽۄۣڛ

अल-कुलम 68

2.तेरे रब/पालनेवाले की नियामत/ अनुग्रह के साथ यह कि तू मजनून/पागलपन के साथ नहीं है।

अल-मुज़्ज़म्मिल 73

10.और धैर्य कर उस पर जो वे कहते हैं और उनसे हिजरत/ परित्याग कर जमील/सौंदर्यपूर्ण परित्याग।

अल-ह्जरात 49

3.निश्चित ही जो लोग अपनी
आवाज़ों को रसूलल्लाह/
भगवान के संदेशवाहक के निकट
नीचे रखते हैं अल्लाह/भगवान
ने उनके दिलों को परहेज़गारी
के लिए इम्तिहान/परख लिया
है। उनके लिए क्षमा और बड़ा
प्रतिदान है।

اَلْقَلَمِ ٢٨

ڡؙٵۘؽؙؙٛٛٛڎڽڹۼؙؠۼۯڗڮ ڕؠؘۻؙٷؙڽ۞ٞ

اَلمُزَّ مّل٧٣

ۅؘٳڝ۬ڔٮٛۼڵٵؽؾؙٷڷۏڹ ۅٙٳۿۼؙۯؙۿؙۮۿۼۘڗٳڿۄؽڵڒؘۛۛۨ

أَخُجُرْتِ ٤٩

ٳؾۘٵڷڹؽ۬ؽؘۼؙۻؙٛۏۘڹٲۻۘۅؘٵڰ ۼڹ۫ۮڒۘۺؙۏڶٳۺٚ ٲۅڵڸػٵڷڹۘؽڹٲڡٛػػڹٳۺ۠ ڡؙؙڵۅ۫ۘڹۿؙۮٙڸڶؾؖڨٙۅ۬ؿ ۘڶۿؙۮۛڞٞۼ۬ڣؚڒٷٞۊٵڿڒۘۼڟؚؽ۫ڒ[۞]

अल-अनआम 6

65.कह दे वह उस पर क़ादिर/
नियंत्रणीय है यह कि तुम पर
अज़ाब/सज़ा नियुक्त करे तुम्हारे
ऊपर से या तुम्हारे पैरों के
नीचे से या तुम्हें समूहों का
लिबास/वस्त्र पहनाकर। और
वह कुछ तुम्हारे कुछ के साथ
अभागापन का मज़ा चखाता
है। देखों हम कैसे आयात/
निशानियों की गिरदान/
आवश्यकतानुसार करते हैं
(अर्थात आयात/निशानियों को
नियमानुसार स्पष्ट करना)
संभवतः कि वह समझ सकें।

159.निश्चित ही जिन्होंने अपने दीन/निर्णय में फ़र्क़/भेद किया और हो गये गिरोह तेरा कदापि उनसे किसी चीज़ में कोई मामला नहीं। निश्चित ही उनका आदेश अल्लाह/भगवान की ओर है फिर वह उनको पेशनगोई/भविष्यवाणी करेगा साथ जो वे कर रहे थे।

الأنعامِر ،

قُلُ هُوالْقَادِرُعَلَىٰ اَنَيْبَعَثَ عَلَيْكُمُ عَنَا اَبَامِّنْ فَوْقِكُمُ اوْمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِكُمُ اوْمِلْسِكُمُ شِيعًا وَيُذِيْنَ بَعْضَكُمُ مِانِسَ بَعْضِ انْظُرُكَيْفَ نُصِرِّفُ الْأَيْتِ لَعَلَّهُمُ مِيْفَقَهُونَ ۞

ٳڹۜٲڷؙؚڔؙؽؙ؋ڗۜڨؙۊؙٳۮٟؽؘؽۿؙۿ ٷػٲٮٛٛۊٝٳۺؽۼٵ ڷۺڝؘڡؚٮؙۿؙۿڔڣٛۺؽؙٷ ٳٮٚۜؠٵٛٲڡؙۯ۠ۿؙۿٳڶۜؽٲٷٷؽ ؿؙڴؽؙڹڽؚٷۿۮؚڔؚؠٵڰٵٮٛۊؙٳؽۿ۬ۘػڰۏؽٙ

प्रश्न5.यदि ईमान/विश्वास वाले क़त्ल/हत्या करने वाले से उसका क़त्ल/हत्या करने का बदला नहीं ले सकते तो हम क्या क़त्ल/हत्या करने को छूट नहीं दे रहे कि वो क़त्ल/हत्या करते रहे?

अल-माइदा 5

33.निश्चित ही उन लोगों का प्रतिफल जो अल्लाह/भगवान और उसके रस्ल/संदेशवाहक से युद्ध करते हैं और वे धरती में बिगाइ/उत्पात का प्रयत्न करते हैं। यह है कि वे कत्ल कर दिए जाएंगे या उनके हाथ और पैर विपरीत दिशाओं से काट दिए जाएंगे या धरती में निष्कासित कर दिए जाएंगे। यह उनके लिए इस दुनिया में तिरस्कार है और अंत में उनके लिए बड़ा अज़ाब/सज़ा है।

34.अतिरिक्त वे लोग जो लौट/
वापसी कर चुके हैं इससे पहले
कि तुम उन पर नियंत्रण प्राप्त
कर लो, बस जान लो के
निश्चित ही अल्लाह/भगवान
क्षमा करने वाला रहम/कृपा
करने वाला है

اَلْمَائِكَةِ ٥

إِنَّهُاجَزُ وُالنَّنِ يُنَ يُحَارِبُونَ اللَّهُ وَرَسُولَهُ وَيَسْعَوْنَ فِى الْاَرْضِ فَسَادًا اَنْ يُّقَتَّكُوْ اَلْوَيُصَلَّبُوْ اَ اَوْ يُنْفَوَّا مِنَ الْاَرْضِ اَوْ يُنْفَوَامِنَ الْاَرْضِ وَلَهُمُ فِى الْاَخِرُةِ عَنَى اللَّهُ نَيَا وَلَهُمُ فِى الْاَخِرُةِ عَنَى اللَّهُ نَيَا

ٳڵۘۘٵڷڔؗؽؙؽؘٵڹؙٷٳ ڡؚڽؙڨڹؙڶٲڹٛؾڨ۫ۑۯٷٳؘۘػڶؽۿؚٟۄ۫ ڡؘٵۼۘڵٷٞٳٳڽۜٳۺؙؙ۠ػۼڡٛٷڒڗۜڿؚؽؙۄٞ۞ۧ

अत-तौबा 9

111.निश्चित ही अल्लाह/भगवान ने मोमिनों/विश्वासियों से उनके नफ्सों/मनोभाव और उनके अमवाल/संपत्ति को खरीद लिया है निश्चित ही उनके लिए स्वर्ग है। वे अल्लाह/भगवान के मार्ग में लडते हैं बस वे (अपने मनोभाव को) कत्ल करते हैं और वे (अपने नफ्सों/मनोभाव के साथ) क़त्ल हो जाते हैं। यह उसके ऊपर सच्चा वादा है तौरात/क़ानून में और इंजील/ खुशख़बरी में और क़्रआन/पढ़ाई में। और कौन है जो अल्लाह/ भगवान से अधिक अपने वादे को परा करे? बस खुशियां मनाओ उस सौंदे के साथ जो तुमने उस (अर्थात अल्लाह/ भगवान) के साथ सौदा किया। और वह बड़ी कामयाबी है।

اَلتَّوْرَةِ ٩

ٳڹٞٳۺ۠ڎٳۺۘٛؾڒؽڡۭڹٲؽٷٛڡڔڹۯٵ ٳٮؙٛۊؙۺۿؙٷٲڡٛۅٳڷۿؙۮ ؠٳؘؾۜڶۿؙ؞ؙٳڹٛۼڐ ؿڡٞؾڷٷؘؽٷؿؙؾٷؙؽ ڡؙؽؿۘڐٷۯڿڠڰ ٷڡؙڽٵٷۏڽۼۿڔ؋ڝڹٳڡٳڷڠڒ ڡؙۺؾڹۺۯۏٳڽڹؿۼػؙڎٳڷڒؽ ٵۺؾڹۺۯۏٳڽڹؿۼػڎٳڷڒؽ ٵڛؙۼۛؗؿؙڔؠڐ

प्रश्न6.यह कैसे हो सकता है कि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को जिंदगी/जीवन देता है जो कि समस्त मानव जाति के लिए जीवन हो जाता है? इसका स्पष्टिकरण कीजिए?

अल-अनआम 6

122.और वही जो मृत था बस
हमने उसे जीवित किया और
हमने उसके लिए न्र/प्रकाश
बनाया, वह लोगों में उसके
साथ चलता फिरता है। क्या
वह उसके अनुरूप हो सकता
है जो अंधेरों में हो
और कदापि उनसे निकलने
वाला न हो। इसी तरह इनकार
करने वालों के लिए ज़ीनत/
आकर्षण दिये गए
जो वह कर्म कर रहे थे।

अश-शूरा 42

52.और इसी तरह हमने तेरी ओर रूह/सार/सारांश को वहयी/प्रेरित किया अपने आदेश से और नहीं तू अदराक/अवगत था कि किताब क्या है और ईमान/विश्वास क्या है, और लेकिन हमने उस (रूह/सार/सारांश) को एक प्रकाश बना दिया हम इसके साथ मार्गदर्शन करते हैं जिस किसी को हम चाहें अपने बन्दों/नौकरों में से और निश्चित ही तू (बशर/व्यक्ति) सीधे पथ की ओर मार्गदर्शन करता है।

الْأَنْعَامِر ٢

أُومَنُ كَانَ مَنْتًا فَأَحَينُنَهُ وَجَعَلْنَالُهُ نُورًا يَّمُشِى بِهِ فِي النَّاسِ كَمَنْ مَّتُلُهُ فِي الظُّلُمُ الْ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّمَٰهُا الْطُلُمُ الْأَلْفِي الْطُلُمُ الْمَالُولِيَنَ كَانَ الْكَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿

أَلشُّوْرٰي ٤٢

وَگذٰلِكَ أُوْحَيْنَاۤ الْيَكَ رُوْحًامِّنَ آمُرِنَا ۖ مَا الْنَكَ تَذرِیُ مَا الْکِنْ جَعَلْنُكُ نُوْرًا وَلَاکْنُ جَعَلْنُكُ نُوْرًا تُهُ بِی یٰہِ مَنْ شَاءُ مِنْ عِبَادِنَا وَاتَّكَ لَتَهُ بِی َ الْی صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْدٍ ﴿

अल-अनफ़ाल 8

24.ऐ वह लोगों जो ईमान/विश्वास लाए हो! अल्लाह/भगवान और उस के रस्ल/संदेशवाहक के लिए उत्तर दो। जब तुम्हें निमंत्रण दिया जाता है ताकि तुम्हें जीवित करे और जान लो कि अल्लाह/भगवान मनुष्य और उसके इदय के मध्य की व्याप्ति में आ जाता है और निश्चय ही तुम उसकी ओर इकट्ठे किए जाओगे।

ٱلْأَنْفَالِ ٨

ڀَايَّهُا الَّذِينَ امَنُوا اسْتَجِيْبُوُا لِللهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا ذَعَاكُمُ لِمَا يُحْيِيْكُمُ وَاعْلَمُ وَاكْ اللهِ يَحُولُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهِ وَانْتُهُ إِلَيْهِ ثَحْشُرُوْنَ وَانْتُهُ إِلَيْهِ ثَحْشُرُوْنَ

अन-नहल 16

97.जो कोई सही कर्म करे नर से हो या मादा से और वह मोमिन/ विश्वासी हो बस हम अवश्य उसे जीवन देंगे अच्छा जीवन और हम अवश्य उनको वेतन देंगे अच्छाई के साथ जो वे कर्म करते थे।

ٱلنَّحُولِ ١٦

مَنْ عَلَ صَالِحًا مِّنُ ذَكُرِ اَوْاُنْثَى وَهُومُوُمُونَ فَلَنُحُرِينَّهُ خَلُولًا طَيِّبُهُ وَلَنَجُزِينَّهُمُ اَجُرَهُمُ إِحْسَن مَاكَانُوْا لَعْمَلُوْنَ ۚ

अल-कुरआन क्या कहता है

मुहम्मद शेख के बारे मे

- 01. रेहान अल्लाहवाला द्वारा मुहम्मद शेख का इंटरव्यू (2011)
- 02. अहमद दीदात द्वारा वैश्विक छात्रों का दावा प्रशिक्षण, IPCI डरबन SA (1988)
- 03. महम्मद शेख का क़रआन से मार्गदर्शन का सफ़र ? (2010)
- 04. म्हम्मद शेख पर जानलेवा हमला (2005)
- 05. महम्मद शेख की जबल-ए-न्र की यात्रा (2006)
- 06. महम्मद शेख दवारा किया गया हज (2006)
- 07. महम्मद शेख दवारा किया गया उमरा (2006)
- 08.महम्मद शेख दवारा खतम-ए-क़रआन की दुआ (2005 के बाद)

बहस

- 11. महम्मद शेख की इस्माईली डॉक्टर से बहस। (1989) (उर्दू)
- 12. प्रश्नोत्तर: महम्मद शेख और पत्रकार (2008) (उर्द्)
- 13. मुहम्मद शेख की परवेज़ी को मानने वालो से बहस (2013) (उर्दू)
- 14. महम्मद शेख की दो सोमाली इमामों से बहस(अंग्रेजी) (2013)
- 15. मुहम्मद शेख की पादरी जेफ़री राइट से बहस (2013) (अंग्रेजी)
- 16. प्रश्नोत्तर : मुहम्मद शेख और अमेरिकी लोग (2013)(अंग्रेजी)
- 17. प्रश्नोत्तर : मुहम्मद शेख और कनाडा के लोग (2013)(अंग्रेजी)
- 18. म्हम्मद शेख की कनाडा में अहमदी म्स्लिमो से बहस(2013)(अंग्रेजी)
- 19. महम्मद शेख की मुफ्ती अब्दल बाक़ी से बहस (2016) (उर्द)
- 20. मुहम्मद शेख ने दुबई के लोगों को आमंत्रित किया (2018)(अंग्रेजी)

अपने भगवान को पहचानें

- 21. अल-कुरआन क्या कहता है भगवान और भगवानों के बारे में(2011)
- 22. अल-क़्रआन क्या कहता है शैतान/इब्लीस के बारे में(2004)

चुने गए व्यक्तित्व

- 23. इब्राहिम का ख़्वाब(PBUH) (2011))
- 24. मुसा की किताब(PBUH) (2011)
- 25. मरयम (PBUH)(2009)
- 26. क्या मरियम अल मसीह ईसा की एकमात्र माता-पिता हैं?(PBUH) (2013)(अंग्रेजी)
- 27. अल मसीह ईसा इब्ने मर्यम(PBUH) (2006)
- 28. अल मसीह ईसा की भविष्यवाणियाँ उनके जीवन और मृत्यु के बारे में। (2013)(अंग्रेजी)
- 29. म्हम्मद (PBUH) (2002)
- 30. मूसा का पहाड़ (PBUH) (2017)

अल्लाह / भगवान की किताब 🔪

- 31. अल -किताब (2011)
- 32. अल-क कुरआन(1991, 2008)
- 33. अल्लाह/भगवान की किताब (2017)(अंग्रेजी)
- 34. क्या क्रआन अल्लाह / भगवान का कलाम/शब्द है?
- 35. तोरात और इंजील (2007)(2011)
- 36. जब्र (2008)
- 37. हदीस (2005)
- 38. स्न्नत (2004)
- 39. हिकमत (2008)
- 40. रूह (2008)
- 41. जवाने/भाषाएं (2008)
- 42. हिदायत /मार्गदर्शन (2009)

वक्ता मुहम्मद शेख के द्वारा

अपनी पहचान/खुद को जानें

- 51. मस्लिम (1991, 2004)
- 52. अहले किताब (किताब के लोग) (2006)
- 53. बनी इसराईल (इसराईल के बेटे) (2003, 2011)
- 54. औलिया/रक्षक) (2011)
- 55. खलीफा/उत्तराधिकारी (2013)
- 56 इमाम (2013)
- 57. फिरके/संप्रदाय
- 58. मुनाफिक
- 59. यह्दी और ईसाई (2008)
- 60. अल्लाह बशर/इंसान से कैसे कलाम/बात करता है? (2019)

पारिवारिक जीवन

- 61. हिजाब/पर्दा (2011)
- 62. निकाह/विवाह (2009)
- 63. मिया बीवी/पति- पत्नी के संबंध (2011)
- 64. फाहिशा/अश्लीलता (2008)
- 65. तलाक (2009)
- 66. माता-पिता और बच्चो का संबंध (2010)

पैसे को कैसे संभालें

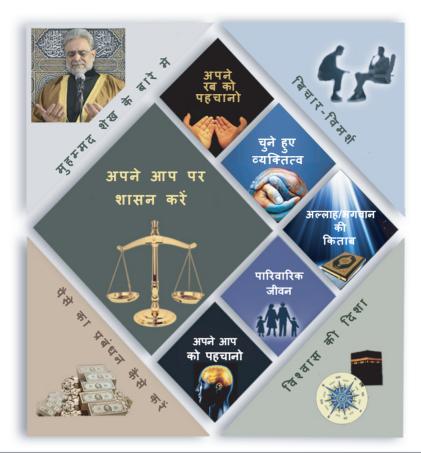
- 71. सदका और जकात/दान पुण्य (2006)
- 72. रिबा/बढोतरी (2006)
- 73 विरासत

विश्वास की दिशा

- 81. इस्लाम और मुस्लिम (पाकिस्तान अमेरिकी सांस्कृतिक केंद्र) (1991) (अंग्रेजी)
- 82. इस्लाम (2004)
- 83. इबराहीम का मजहब/धर्म (PBUH) (2010)
- 84. सीधा रास्ता (2013)
- 85. सिफारिश (2010)
- 86. कावा और क़िब्ला (2007)
- 87. मस्जिद (2013)
- 88. सलाह/प्रार्थना (2011)
- 89. महतर्म महीने/वर्जित महीने (2006)
- 90. रोजा/व्रत (2008)
- 91. उमरा और हज (2013)
- 92. उम्म-उल-क्रा/शहरों की मां (2019)

ह्कुम वाली आयात से अपने आप को नियंत्रित करे

- 101. जिहाद/संघर्ष (2006)
- 102. कत्ल/शारीरिक हत्या (2005)
- 103. नफसियाती कत्ल/मनोवैज्ञानिक हत्या (2010)
- 104. देहशतगरदी/आतंकवाद (2006)
- 105. जंग/युद्ध (2006)
- 106. किसास/बदल (2012)
- 107. नफसियाती जख्मों की तसल्ली/मानसिक दर्द की तसल्ली (2012)
- 108. अखलाक/अच्छा व्यवहार



□ IPC □ एक गैर-लाभकारी धर्मार्थ संगठन है जो जरूरतमंदों, अनाथों, गरीबों और बेघरों की मदद करने में व्यस्त है, चाहे उनका धर्म और रंग कुछ भी हो। अंसाररुल्लाह / अल्लाह के सहायक बनने के लिए हमारे साथ हाथ मिलाएं, स्वयंसेवक बनें और दावा के हमारे मिशन का समर्थन करें, यानी दुनिया की जनता के लिए अल-इस्लाम का निमंत्रण। अल्लाह आपको पुरस्कृत करे और इस दुनिया में और उसके बाद (आमीन) आपकी उदारता के लिए आशीर्वाद दे।

दान करे ओर संपर्क करे :www.iipccanada.com/donate/

